उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

दिगंत - भाग - 2 - पद्य भाग

शीर्षक :- 'तुमुल कोलाहल कलह में'

कवि :- जयशंकर प्रसाद

व्याख्या :—

चिर - विषाद विलीन मन की
इस व्यथा के तिमिर वन की;
मैं उषा - सी ज्योति - रेखा,
कुसुम विकसित प्रात रे मन!

प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगंत-भाग-2 के तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक से ली गई है। इसके रचयिता छायावाद के महान कवि श्री जयशंकर प्रसाद जी हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि शिरोमणि ने मन की व्यथा का वर्णन किया है।

प्रस्तुत पदों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जब मनुष्य चिर - विषाद में विलीन हो जाता है तो घुटन महसूस करने लगता है, व्यथा रूपी अन्धकार में भटकने लगता है। उस समय में श्रद्धा अर्थात् आशा उसके लिए सूर्य की ज्योतिपुँज के समान पथ - प्रदर्शक तथा प्रस्फुटित पुष्प के समान जीवन को आनन्दित करती है।

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने श्रद्धा के महत्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में मानव घोर कलह में डूबा हुआ है। परिणामस्वरूप आज का मानव नाना प्रकार के कष्टों को झेल रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में श्रद्धा ही सबों को सम्बल प्रदान करने वाली है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 31/10/20
रा०कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर -

शास्त्री प्रथम खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र - राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न - 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा इस प्रकार कीजिए कि उसकी समस्त विशेषताएँ स्पष्ट हो जाए।

उत्तर :- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने स्वयं कहा है कि 'निर्मला' उपन्यास दहेज और अनमेल विवाह की करुणा भरी सामाजिक कहानी है। असमय निर्मला के पिता का दुखान्त अन्त हो जाने के कारण दहेज लोभी 'भालचन्द्र' अपने पुत्र का विवाह सम्बन्ध तोड़ लेता है। विवशता के कारण माँ कल्याणी तीन पुत्रों के पिता वकील तोताराम से निर्मला का विवाह कर देती है। निराश युवती निर्मला वृद्ध पति के प्रेम-स्वांगो से विरत हो जाती है। वह अपने ससुराल में तीनों पुत्रों का सम्भाल कर रखना चाहती है परन्तु क्रमशः तीनों पुत्र काल के गाल में समा जाते हैं। भुवन-मोहन सिन्हा जो दहेज लोभी होने के कारण निर्मला से विवाह करना मना कर दिया था, वही निर्मला से अभद्र व्यवहार करता है। सुधा को जब इसकी जानकारी होती है तो वह अपने पति सिन्हा को धिक्कारती है। आत्म ग्लानि से सिन्हा आत्म हत्या कर लेता है। निर्मला भी घुलती हुई मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। सन्देह ही समस्त परिवार को भस्म कर देता है। 'निर्मला' उपन्यास करुणान्त है। आत्म हत्याओं के निरन्तर घटित होने से वातावरण कुछ अतिरंजित हो गया है, परन्तु पाठक पर करुण प्रभाव पड़ता है। निर्मला

बाबू उदयभानु लाल अपनी प्रतिष्ठा की ~~रक्षा~~ रक्षा के लिए 'निर्मला' के विवाह में शाही खर्च करने के लिए तैयार हैं। इस शाही खर्च पर ही उनकी पत्नी से तकरार हो जाती है। बात यहाँ तक बढ़ जाती है कि वे सुनसान रात में घर छोड़ कर चल देते हैं। थोड़ी दूर जाने के पश्चात ही उनका पुराना दुश्मन उनकी हत्या कर देता है। उनकी मृत्यु के पश्चात परिस्थितियाँ बदल जाती है। समधी भालचन्द्र विवाह करने से मुकर जाते हैं। 'निर्मला' की माँ विवश होकर अधेड़ उम्र की व्यक्ति से शादी कर देती है।

वृद्ध वकील 'तोताराम' निर्मला को रिझाने का प्रयास करता है परन्तु 'निर्मला' को यह रास नहीं आता है। वह अपने भाग्य से समझौता कर वैवाहिक जीवन का आनन्द उठाना चाहती है। वह इसके लिए अपने तीनों पुत्रों के मधुर व्यवहार बनाकर अपना ममत्व लुटाना चाहती है परन्तु 'विधि' को कुछ और ही मंजूर है। परीवार में सन्देह का उत्पन्न होना सर्वनाश का ~~कारण~~ कारण बन जाता है। इस सन्देह की ज्वाला में जलकर सम्पूर्ण परिवार जलकर खाक हो जाता है।

इसी बीच में उपन्यास में सुधा और भुवन मोहन की कथा —

शेष आगे-

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

निबंधमाला – गद्य खण्ड

शीर्षक:– दिल्ली, दिनकर और कुम्हार का चाक

लेखक:– प्रो० प्रमोद कुमार सिंह

प्रश्न:– 'दिल्ली, दिनकर और कुम्हार का चाक' शीर्षक निबंध के आधार पर दिनकर जी का संक्षिप्त परिचय दीजिए। शेषभाग –

उत्तर:– दिनकर जी जब गंगातट की मिट्टी छोड़कर दिल्ली आए तो उन्हें इस रेशमी नगर में चिनांशुक भी चुभने लगी। इनके भीतर जो सिरजनहार था वह यमुना तट का रसिया नहीं बन सकता था। परिणामतः इन्हें सम्पूर्ण दिल्ली में खोजने पर भी कुम्हार का कोई चाक दिखाई नहीं पड़ा। दिनकर जी चूँकि देहात की मिट्टी से आये थे, इसलिए मिट्टी के प्रजापति को ढूँढ़ रहे थे, परन्तु इसमें दिल्ली प्रवास की वह चतुराई नहीं थी जो रहीम में थी। रहीम को चाक मिला था। दिनकर जी को वह कहीं दिखलाई नहीं पड़ा। इन्हें दिल्ली का तिलिस्म भी नहीं समझ में आया। अतः वे राजसभा में जनता को चक्रवर्ती बनाने के लिए हुँकार भरने लगे - सिंहासन खाली करो की जनता आती है।

दिल्ली किसी की नहीं है। उसका स्वभाव अप्सरा का है। इसलिए वह न रहीम की रही न दिनकर की। उसने रहीम से तो मधुकरी भी मँगवाई थी। रहीम यह अच्छी तरह जानते थे कि 'दिल्ली मिट्टी पोतकर देहातिन बन सकती है। कालिदास की जनपद वधू या पन्त की ग्राम्या की तरह। वह जवाहरात छोड़कर निराभरण कुमारी का स्वांग भी कर सकती है। फिर भी दिल्ली ने रहीम को छला। दिनकर जी को पता नहीं था। वे नौसिखुए थे। इसलिए उन्हें चाक की खोज में खाक छाननी ही थी।

दिनकर जी को यह मालुम नहीं था कि दिल्ली बड़ी बेरहम और बेवफा है। वह अपने यहाँ अपने वालों को अपनी चाल-ढाल में इस तरह मोहित कर उसका शोषण कर लेती है जैसा कि 'मिट्टी का नया बर्तन उत्कंठित जल को ~~श~~ सोख लेता है।

दिल्ली में आज भी उसका चक्र चलता है। राजनीतिक पात्रों का सृजन और संहार इस चाक पर होता

शेष आगे –

नाटकीय मोड़ देने के लिए प्रारम्भ हो जाती है। मुंशी तोताराम का बड़ा लड़का मंसा राम का इलाज डॉ० सिन्हा ने किया था। इसलिए 'निर्मला' और 'सुधा' आत्मीय प्रगाढ़ता काफी बढ़ गयी थी। सुधा निर्मला की सच्ची सहेली बन जाती है। दोनों परिवारों में प्रसन्ता का वातावरण बन जाता है।

निर्मला करुण-रस प्रधान उपन्यास है। सर्वाधिक घात-प्रतिघात होने के कारण निर्मला का चरित्र सजीव बन गया है। अन्त में वह सब कुछ खोकर शून्य हो जाती है। वास्तव में वह वात्सल्यमयी है।

सुधा दर्प और ओज वाली नारी है। वह अपने कामुक पति का विरोध करती है। सुधा के कारण ही निर्मला की छोटी बहन 'कृष्णा' का विवाह डॉ० सिन्हा के छोटे भाई से होना सम्भव हो पाता है।

मुंशी तोताराम वकील में मानवीय गुणों का ~~सर्वथा~~ सर्वथा अभाव दिखाई पड़ता है। अपने बच्चे को भी सन्देह की दृष्टि देखता है। मंसाराम, जियाराम और सियाराम भी अपने-अपने कार्यों से परिवार में संकट ही उत्पन्न करते हैं।

निष्कर्षतः यह कहना समीचीन ही होगा कि 'निर्मला' उपन्यास जगत की अनुपम कृति है। वह समाज में दहेज की वेदी पर बलिदान होने वाली नारी की करुण गाथा है। 'निर्मला' की कहानी मुंशी प्रेमचन्द ने सरल भाषा और सहज शैली में कही है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 31/10/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं०महा वि० कुचसेना, पूर्णियाँ

Date ______ Page ______

रहता है। परन्तु देहात से जाने वाला देहाती राजनीतिज्ञ इस चंचला की प्रकृति को पहचान नहीं पाता और वह पिट जाता है।

दिनकर जी की यह स्थिति हुई थी। औरों की भी यही दशा होती है, और होती रहेगी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरुसेना, पूर्णियाँ

31/10/20